2. भारतेंदुयुगीन हिंदी निबंध का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी कहानी के विकास का सामान्य परिचय दीजिए ।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।(15)

अथवा

'बहादुर' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4. 'घर जोड़ने की माया' निबंध का सार लिखिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबंध की समीक्षा कीजिए।

5. रामा का चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर मंगर की समीक्षा कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए । (6)

(क) व्यंग्य

(ख) संस्मरण

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

13/5/25 (E)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4732 **J**

Unique Paper Code : 2055092003

Name of the Paper : HINDI GADYA KE VIVIDH CHARAN (C)

Name of the Course : **B.COM. (PROG.) GE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से **किन्ही तीन** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (8+8+8=24)

(क) गधे का छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है बैल। जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में बछिया के ताऊ का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं हैं। बैल कभी-कभी मारता

भी है, कभी-कभी अडियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असन्तोष प्रकट कर देता है(अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

अथवा

मैंने आँगन में नजर दौड़ाई। एक ओर स्टूल पर उसका बिस्तर रखा था। अलगनी पर उसके कुछ कपड़े टँगे थे। स्टूल के नीचे वह भूरा जूता था, जो मेरे साले साहब के लड़के का था। मैं उठकर अलगनी के पास गया और उसके नेकर कर की जेब में हाथ डालकर उसके सामान निकालने लगा वही गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, खूबसूरत पत्थर, ब्लेड, कागज की नावें... ।

(ख) हर दफा दिखावे और नाम की खातिर छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना परले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन एक जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। मानो इस बंदूक में एक ही गोली है। हाँ कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इस गरज से हट जाते हैं कि उनका अनमोल जीवन किसी और भी उत्तम काम के लिए बच जाय ।

अथवा

घर फूंकने का अर्थ है धन और मान का मोह त्याग देना, भूत और भविष्य की चिन्ता छोड़ देना और सत्य के सामने सीधे खड़े होने में जो कुछ भी बाधा हो उसे निर्ममता पूर्वक ध्वंस कर देना। पर सत्यों का सत्य यह है कि लोग कबीरदास के साथ चलने

की प्रतिज्ञा करने के बाद भी घर नहीं फूँक सके। मठ बने, मंदिर बने, प्रचार के साधन आविष्कार किये गये और उनकी महिमा बताने के लिए अनेक पोथियाँ रची गई। इस बात का बराबर प्रयत्न होता रहा कि अपने इर्द-गिर्द के समाज में यह कोई यह न कह सके कि इन का अमूक काम सामाजिक दृष्टि से अनुचित है।

(ग) उस समय परिवार में कन्याओं की अभ्यर्थना नहीं होती थी। आँगन में गानेवालियाँ, द्वार पर नौबत वाले और परिवार के बूढ़े से लेकर बालक तक सब पुत्र की प्रतीक्षा में बैठे रहते थे। जैसे ही दबे स्वर से लक्ष्मी के आगमन का समाचार दिया गया, वैसे ही घर के एक कोने से दूसरे तक दरिद्र निराशा व्याप्त हो गई। बड़ी बढ़ियाँ संकेत से मूक गानेवालियों को जाने के लिए कह देतीं और बड़े-बूढ़े इशारे से नीरव वाजे वालों को विदा देते यदि ऐसे अतिथि का भार उठाना परिवार की शक्ति से बाहर होता, तो उसे बैरंग लौटा देने के उपाय भी सहज थे।

अथवा

उसका खास कारण मंगर का यह हट्टा-कट्टा शरीर और उससे भी अधिक उसका सख्त कमाऊपन, जिसमें ईमानदारी ने चार चाँद लगा दिए थे। जितनी देर में लोगों का हल दस कठा खेत जोतता, मंगर पंद्रह कठा जोत लेता और वह भी ऐसा महीन जोतता कि पहली चास में ही सिराऊ मिलना मुश्किल । मंगर को यह बताने की जरूरत नहीं कि कल किस खेत में हल जाएगा। वह शाम को ही सारे खेतों की आर आर घूम आता और जिसकी ताक होती, वहाँ हल लिये सुबह - सुबह पहुँच जाता।